अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

हिंदी और हरियाणवी बोलियों का अध्ययन

सुनीता कुमारी
शोधार्थी
हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विज्ञान
बनस्थली विद्यापीठ, निवाई, राजस्थान, भारत
प्रो. गीता कपिल
हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विज्ञान
बनस्थली विद्यापीठ, निवाई, राजस्थान, भारत

सारांश

भारत के अधिकतर राज्यों में हिंदी भाषा बोली जाती है। हिंदी में अनेक बोलियां पाई जाती है। हरियाणवी भी उनमें से एक है। इस लेख के माध्यम से हम हरियाणवी बोलियों की जानकारी प्राप्त करेंगे। किसी भी भाषा या बोली को अच्छे से समझने के लिए व्याकरण का होना जरूरी है। इससे भाषा या बोली का सही रूप जाना जा सकता है। इस लेख में भी हरियाणवी बोलियों का वर्णन किया गया है और कारक के माध्यम से उनका सही ढंग दर्शाने की कोशिश की है। बोलियों के माध्यम से लोकसंस्कृति एवं लोकभाषाओं के विकास में सहायता मिलती है। इनके माध्यम से किसी भी संस्कृति को आसानी से जाना जा सकता है।

परिचय :–

भाषा' संस्कृत के 'भाष्' धातु से निकला है, जिसका अर्थ होता है, बोलना या कहना। मनुष्य समाज में रहकर ही भाषा सीखता है। समाज में जो भाषा बोली जाती है वह उसी भाषा को बोलना सीख जाता है। भाषा का प्रमुख लक्षण है अनुकरणीयता। भाषा सीखनी है तो उसका सबसे अच्छा तरीका है अनुकरण करना।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

परिभाषा–

पंडित किशोरीदास के अनुसारः–

''विभिन्न अर्थों में संकेतित शब्द समूह ही भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने विचार या मनोभाव दूसरों के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं।''

डॉ॰ बाबूराम सक्सेना के अनुसारः–

''जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है, उसकी समष्टि को भाषा कहते हैं।''

भाषा और बोली का अंतर

भाषा और बोली में कोई खास अंतर नहीं, बोली ही अनेक कारणों से भाषा बन जाती है बोली और भाषा में निम्न अंतर हैः–

- भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है जबकि बोली का क्षेत्र सीमित होता है।
- भाषा सीखी जाती है जबकि बोली का ज्ञान अनुकरण से होता है।
- भाषा साधन से अधिगत होती है जबकि बोली का ज्ञान स्वाभाविक रूप में होता है।
- भाषा शिक्षा का माध्यम होती है जबकि बोली नहीं।
- भाषा व्याकरण से नियंत्रित हुआ करती है जबकि बोली अनियंत्रित रहती है।

जितेंद्र, डॉ॰, देवेन्द्र प्रसाद सिंह, भभाषा विज्ञान और हिंदी भाषा , निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ, **11–12**

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

हिन्दी क्षेत्र और उसकी बोलियाँ

हिन्दी भाषा का उद्य संस्कृत से हुआ है। हिन्दी ही नहीं भारत की अनेक दूसरी भाषाओं का आधार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संस्कृत ही है लेकिन संस्कृत और हिन्दी के बीच और भी दूसरी भाषाएं हैं– पाली, प्राकृत और अपभ्रश। हिन्दी क्षेत्र के अर्न्तगत यदि उपभाषाएं बोली जाती हैं तो उसकी विभिन्न बोलियाँ भी प्रयोग में लाई जाती है। हिन्दी बोलने वाले लोग न केवल भारत के विभिन्न क्षेत्र में निवास करते हैं, बल्कि प्रवासी भारतीयों द्वारा विदेशों में भी बोली जाती है। अतः हिन्दी भाषा का भौगोलिक विस्तार भारत और भारत के बाहर भी है। हिन्दी भाषा का प्रयोग और व्यवहार भारत के विस्तृत क्षेत्र में होता है। हिन्दी भाषा के क्षेत्र को तीन भागों में बाटा जा सकता है–

(क) हिन्दी क्षेत्र

हिन्दी क्षेत्र के अन्तर्गत प्रमुख रूप से हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और बिहार राज्य आते हैं।

(ख) अन्य भाषा क्षेत्र

अन्य भाषा क्षेत्र के अंतर्गत कनार्टक और आंध्र प्रदेश के हिन्दी वाले क्षेत्र, कलकता, बंबई, अहमदाबाद आदि भारत के वे महानगर आते हैं जहाँ हिन्दी बोली जाती हैं।

(ग) भारतेतर क्षेत्र

भारत के बाहर अन्य कई देशों में हिन्दी बोलने वाले लोगों की संख्या कॉफी है। जैसे– फीजी, सूरीनाम, मारिशस और नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र में हिन्दी बोलने वाले लोग रहते हैं। विश्व में कई और भी ऐसे देश हैं जहाँ हिन्दी भाषा बोली जाती

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

है। इंग्लैंड, तजाकिस्तान, अफ्रिका, दक्षिण अफ्रिका, अमेरिका, मलेशिया, सिंगापुर आदि देशों में भी हिन्दी भाषी लोग मौजूद है।

हिन्दी की उपभाषाएं और बोलियाँ

हिन्दी में पाँच उपभाषाएं और सत्रह बोलियों का वर्णन किया गया है जो इस तरह है–

उपभाषाएं	बोलियाँ
1 पश्चिमी हिन्दी	1 कौरवी (खडी बोली) 2 ब्रजभाषा 3 हरियाणवी 4 बंदेली 5 कन्नौज
2 पूर्वी हिन्दी	1 अवधी 2 बघेली 3 छतीसगढी
3 राजस्थानी	1 पश्चिमी राजस्थानी(मारवाडी) 2 पूर्वी राजस्थानी(जयपुरी) 3 उत्तरी राजस्थानी(मेवाती) 4 दक्षिणी राजस्थानी(मालवी)
4 पहाडी	1 पश्चिमी पहाडी 2 मध्यवर्ती पहाडी(गढवाली)
5 बिहारी	1 भोजपुरी 2 मगही 3 मैथली

शर्मा, महेन्द्रपाल, डॉ॰, भहिंदी भाषा : विकास के सोपान , संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ, 34

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

1 पश्चिमी हिन्दी

''जार्ज ग्रियर्सन ने भाषा का विश्लेषण करते हुए उसके पश्चिमी हिन्दी और पूर्वी नाम रखते हैं। उन्होने आठ बोलियों को हिन्दी के अन्तर्गत स्वीकार किया था। पश्चिमी हिन्दी में खडी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी, बंदेली, कन्नौज और पूर्वी हिन्दी में छतीसगढी, अवधी, बघेली आती है।''[1] कारक में इसका प्रयोग निम्न प्रकार से किया गया है–

(क) परसर्ग पश्चिमी हिन्दी

कर्ता	: ने, नैं, ने, नें, न
कर्म सम्प्रदान	: को, कौ, कू, कूं, कु, कुं, ख, क
करण–अपादान	: से, सी, ते, ते, सैं, सें, सों
संबंध	: का, के, की, कौ, को
अधिकरण	: में, मै, पर, पै, पे,

(ख) मूलरूप

पश्चिमी हिन्दी में मूल रूप एक ही होता है। जैसे– हिन्दी मे घोडा, दीर्घ रूप घोडवा, दीर्घतर घोडवना।

(ग) कारक रूप

कारक रूपों में सर्वाधिक अंतर यह है कि पश्चिमी हिन्दी में आकारान्त पुल्लिंग का एकवचन विकार रूप अधिकांश बोलियों में प्रायः एकारान्त (लडके, घोडे) होते हैं।

शर्मा, महेन्द्रपाल, डॉ॰, भहिंदी भाषा : विकास के सोपान , संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ, **34**–35

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

2 पूर्वी हिन्दी

पूर्वी हिन्दी का क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से पहाडी, बिहारी और पश्चिमी हिन्दी के मध्य स्थित है। पूर्वी हिन्दी के बोलने वालों की संख्या भी करोडों में है। पूर्वी हिन्दी में साहित्य भी भरमार मिलता है। महाकवि तुलसीदास, बाबा रामचरण, मानदास, राम भक्ति शाखा के कवियों ने साहित्य इसी भाषा में रचा।

(क) मूल रूपः

पूर्वी हिन्दी में अनेक शब्दों में–या युक्ति दीर्घ रूप या बना दीर्घतर रूप भी मिलते हैं। जैसे–घोडा–घोडवा, घोडवना, लडका–लारिका, लारिकवा आदि।

(ख) सर्वनाम

सर्वनाम के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार है–

मैं	––	मई, में
मेरा–तेरा	––	मोर, तोर
हमारा–तुम्हारा	––	हमारा, तुम्हारा, तोमार
इस	––	उह, उओ

3 राजस्थानी

राजस्थानी का अर्थ है 'राजस्थान का'। राजस्थान शब्द का प्रयोग बहुत प्राचीन है। राजस्थानी बोलियों की अपनी कुछ विशेषताएं हैं। इसी के कारण मरू के रूप में इसका प्रयोग भारतीय भाषाओं के अस्तित्व काल से ही हो रहा है। राजस्थानी भाषी क्षेत्र सिंधी, पंजाबी, बांगरू, ब्रजभाषा, बुन्देली, मराठी, गुडगांव, अलवर, भरतपुर, जयपुर, बुंदी, कोटा, उदयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर आदि तक फैला है।

शर्मा, महेन्द्रपाल, डॉ॰, भहिंदी भाषा : विकास के सोपान , संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ, 40–41

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

डॉ॰ ग्रियर्सन ने राजस्थानी बोलियों को पांच वर्गों में रखा है।

पश्चिमी राजस्थानी

दक्षिणी	**दक्षिण पूर्वी**	पश्चिमी	**पूर्वी**	**उत्तरी**
राजस्थानी	राजस्थानी	राजस्थानी	राजस्थानी	राजस्थानी

1 → **पश्चिमी राजस्थानी**
- क्षेत्र–जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर
- प्रमुख बोलियां– मारवाडी, थली, बीकानेरी, बागडी , शेखावटी, मेवाडी, खैराडी सिरोही, गोडवाडी तथा देवडाबाटी

2 → **उत्तरी पश्चिमी** राजस्थानी
- क्षेत्र– अलवर, भरतपुर, तथा दिल्ली, गुडगांव
- प्रमुख बोलियां– अहीरवाटी तथा मेवाती

3 → **मध्य पूर्वी राजस्थान**
- क्षेत्र– जयपुर, कोटा तथा बूंदी
- प्रमुख बोलियां– जयपुरी, किशनगढी, अजमेर तोरावटी, राजावटी, चौरासी तथा नागरचाल

4 → **दक्षिणी पूर्वी राजस्थान**
- क्षेत्र– मालवा
- प्रमुख बोली– मालवी

5 → **दक्षिणी राजस्थान**
- क्षेत्र– नीमाड
- प्रमुख बोली– नीमाडी

शर्मा, महेन्द्रपाल, डॉ॰, भहिंदी भाषा : विकास के सोपान , संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ, **41**

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

4 पहाडी

यह बोली पहाडी भागों में बोली जाती है इसलिये इसको पहाडी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत तीन रूप आते हैं– पश्चिमी पहाडी, मध्यवर्ती पहाडी, पूर्वी पहाडी। इनकी बोलियां नेपाली, कुमायूंनी और गढवाली है। पहाडी की बोलियों में साहित्यिक महत्व केवल नेपाली और कुमायूंनी का ही है। अन्य में केवल लोक–साहित्य ही उपलब्ध है। पहाडी के लिए नागरी लिपि का प्रयोग होता है। इसमें कारक का उदाहरण इस प्रकार है–

परसर्ग

कर्ता : न, ने, ल

कर्म–सम्प्रदान : कज, कूं, कू, कौं, कैं, तैं, तई, सैं, छनी, सणी, सिणी, हणी, खुणी, सिपीं, छनैं।

करण–अपादान : सि, सी, मान, न, से, ल, ऐइ, आउ, आऊ, सी, बिटे, बीटि, ते, न

संबंध : को, कु, की, का, र, रा, री, औज

अधिकरण : मा, मां, मुं, मथे, मंजे, मंग, मि, म्, हिं, हि, तनै, उब्बो, इ, तलक

5 बिहारी

हिंदी प्रदेश की उपभाषा को बिहार में बोला जाता है। बिहार की तीनों बोलियों मैथिली, मगही और भोजपुरी का एक वर्ग बनाकर उन्हें बिहारी नाम देने का

शर्मा, महेन्द्रपाल, डॉ॰, भहिंदी भाषा : विकास के सोपान , संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ, 41

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

श्रेय ग्रियसन को जाता है। बिहारी को पूर्वी बिहारी और पश्चिमी बिहारी दो बोलियां आती है। पूर्वी बिहारी के अंतर्गत मैथली और मगही दो बोलियों आती हैं तथा पश्चिमी बिहारी में केवल एक आती है भोजपुरी। बिहारी की बोलियों में साहित्य–रचना प्रमुखः केवल मैथिली में हुई है।

बिहारी का विकास पश्चिमी मागधी अपभ्रंश से हुआ है। कारक में इसका प्रयोग इस तरह से है–

कर्ता : ने, नै, नैं
कर्म–सम्प्रदान : के, कें, को, ला, ले, लागि, लाग, खातिर, वास्ते
करण–अपा : से, सें, सों, संते, करते
संबंध : क, के, कें, कर, कै, के, कि, का
अधिकरण : में, मों, पर, परि, म्में

इस तरह हिंदी के अन्तर्गत ये सब बोलियां मानी जाती है। हिंदी क्षेत्र की कुछ अन्य बोलियां ऐसी है जिनका परिचय हिंदी भाषा के विकास और उनकी बोलियों के पहचान के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। जिससे हिंदी की प्रमुख बोलियों को समझने तथा हिंदी शक्ति और सीमा की पहचान करनम में मदद मिलेगी।

हरियाणवी और उसकी बोलियां

हरियाणा प्रदेश आर्य–वंशी मानवों तथा आर्य सभ्यता का भारत–भूमि पर जन्म तथा विकास स्थल है। हरियाणवी भाषा धरती से लेकर स्वर्ग तक के चिन्तन दृश्यांकन व जीवन–सबंद्ध क्रिया कलापों का अध्ययन है

शर्मा, महेन्द्रपाल, डॉ॰, भहिंदी भाषा : विकास के सोपान , संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ, 48

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

हरियाणा शब्द हरियाणा प्रदेश के निवासियों तथा उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा का द्योतक है, जिसकी उत्पति हरियाणा के साथ 'वी' प्रत्यय जोडने से हुई है। यहाँ हरयिाणवी से तात्पर्य हरियाणा प्रदेश की भाषा से ही है। हरियाणवी भाषा में बाहरी ध्वनियों को, शब्दों को, मुहावरों को आत्मसात करने की शक्ति दूसरी भाषाओं की अपेक्षा बहुत अधिक है। यदि हम हरियाणवी में रचे गए साहित्य का अध्ययन करें तो पाएंगे कि सभी विधाओं की रचना इस भाषा में हुई है। कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, पत्र आदि विभिन्न विधाओं पर यहाँ के साहित्यकारों में अपनी लेखनी चलाई है। हरियाणा के अनेक कवि आजकल हरियाणवी में कविताएं लिख रहे हैं, जो हरियाणा की पत्र–पत्रिकाओं में निरन्तर स्थान पा रही हैं। हरियाणा साहित्य अकादमी ने ऐसी ही संकलन प्रकाशित करके हरियाणवी के विकास को नयी दिशा दी है। किसी भी भाषा का विकास का मूल आधार होती है वहां के लोगों की वाणी जो लोकभाषा या बोली के रूप में निःसृत होती है। किसी निश्चित क्षेत्र में प्रचलित बोलचाल में उस सहज सलीके को बोली कहा जाता है। जिससे वहां के आम लोग अपने घरों में बिना मिलावट और बनावट के इस्तेमाल करते हैं। बोली भाषा और जबान मिलाप की निशानियाँ है। बोली या लोक भाषा की अस्मिता को उजागर करते हुए ''श्री नारायण लाल परमार ने कहा है। कि सही अर्थों में लोक तो भाषा की टकसाला हुआ करती है। संस्कृत शब्दों को हिंदी रूप देने में विद्वानों और पंडितों का कोई योगदान नहीं है। हिंदी का जो रूप आज हम देख रहे हैं, वह तो गाँव की टकसाला का कमाल है।''[1]

1 शर्मा, पूर्णचन्द, डॉ॰, हरियाणवी और उसकी बोलियों का अध्ययन, हरियाणा पब्लिकेशन ब्यूरो, अम्बाला छावनी, पृष्ठ, 24

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

इस प्रकार हिंदी के आदि जन्मदाता होने का श्रेय किसी को दिया जाए तो गाँव वालों को ही दिया जाना चाहिए। अतः भाषा और बोलियों का पारस्परिक संबंध ऐसा ही है, जैसा वृक्ष और उसकी शाखाओं का। बोलियां भाषा रूपी वृक्ष की वे जडें हैं, जिनसे समुचित खुराक पाकर वह हरा भरा रहता है तथा फलता फूलता है।

हरियाणवी की उत्पति उतरी शौरसेनी अपभ्रंश के पशिचिमी रूप से हुई है। खडी–बोली, अहीरवाटी, मारवाडी, पंजाबी से घिरी इस बोली को कुछ लोग खडी बोली से प्रभावित बताते हैं। कुछ लोग बांगरू नाम का प्रयोग हरियाणवी के लिए करते हैं। इसके कारक रूप इस प्रकार हैं–

कर्त्ता– ने, नें, नैं

तूँ नें लिख लियो होगो	(तुमने लिख लिया होगा)
मन्नै रोटी खा ली	(मैनें रोटी खा ली)
ऊँ नैं दरखत लगा दियो	(उसने पेड लगा दिया))

कर्म– ने, नें, नै, नैं, न्नैं, ते, तैश ती, कै, रे

रे तूं खेलण लागरया सै	(रे तुम खेल रहे हो)
वोह् न्हा–धो कै आवैगो	(वो नहा धो के आएगा)
तू ते कई बार कह दियो	(तुमसे बहुत बार कह दिया)
थम नै लिख लियो होगो	(तुमने लिख लिया होगा)

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

करण–अपादान– तै, ते, ती, तैं, घोरे ते, सिते

मेरा तै रोया कोनी जावै (मुझसे रोया नहीं जाता)

बाहरण घोर अंधेरा होरया सै (बाहर बहुत अंधेरा हो रहा है)

तू तैं घणा सयाणा सै (तुम तो बहुत समझदार हो)

संबंध– का, के, कै, की

कै तो खेल ल्यो कै पढ ल्यो (या तो खेल लो या पढ लो)

स्कूल का कोन्या बेरा पाट्या (स्कूल का पता नही लगा)

सेनू की बेबे क्रिकेट खेल्य सै (सोनू की बहन क्रिकेट खेलती है)

अधिकरण– में, मैं, म्हां, महं, म्हं, पे, पै, पअ, आ

मैं खा–पी कैं आऊंगो (मैं खाके आउंगा)

वाह् पै घी ले आ (उससे घी ले आ)

लत्ता संदूक म्हं धरदे (कपडे संदूक में रखदो)

अहीरवाटी बोली

अहीरवाट क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली को अहीरवाटी कहा जाता है। अहीरवाटी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है अहीर+वाटी। जिसका अर्थ है–अहीरों का रहने का स्थान। अहीर को आभीर के नाम से भी जाना जाता है। पंचतंत्र में

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

अहीरवाट को आभीर देश से जाना जाता है। अहीरवाटी बोली मुख्यतः बांगरू, बागडी, और मेवती से निकली हुई है। हालांकि सभी बोलियों में क्रियाओं के रूप एक जैसे से बनते हैं। जबकी अहीरवाटी अपनी स्थानीय बोली विशेषताओं के चलते अन्य बोलियों से अलग है। अहीरवाटी की वर्णमाला, प्रत्यय, उपसर्ग, समास, संज्ञा आदि लग–भग बांगरू के समान है। जैसे–

बांगरू में जैसे– पीणा, आणा, जाणा, गाणा, काटणा, रांधणा, दादा ,मामा आदि।

अहीरवाटी में– पीणो, आणो, जाणो, गाणो, काटणो, रांधणो, दादो, मामो आदि। इसके कारक रूप इस प्रकार है–

कर्ता : अहीरवाटी में कर्ता कारक '' नै '' भूतकालिक सकर्मक क्रिया में प्रयोग होता है जैसे–

(माया ने पत्र लिखा)	माया नै पत्र लिख्यो
(सोनू ने क्रिकेट मैच देखा)	सोनू नै क्रिकेट को मैच देख्यो
(कविता ने खाना खाया)	कविता नै खानो खायो

कर्म : कर्म कारक का चिह्न ''को'' तथा ''नै'' है। अहीरवाटी में कहीं इसका प्रयोग होता है कही नहीं भी होता जैसे–

(गाय को पानी पिला लाओ)	गावडी नै पाणी प्या ल्या
(गोलू को बाजार ले जाओ)	गोलू नै बाजार ले जा
(सोहन ने राम को थप्पड मारा)	सोहन नै राम के थप्पड मार्‌यो

करण : अहीरवाटी में करण कारक के रूप में ''तै'' तथा ''सै'' चिन्हों का प्रयोग होता है जैसे–

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

(सुरेश बस से आया) सुरेश बस सै आयो

(हाथों से काम और मुंह से बात करा) हाथा सै काम करो, मुह सै बात

(मुझ से ठठ्ठा मत कर) मेरा तै चबोडो मत कर

(साबुन से कपडा धो ले) साब्बन तै कपडो धो ले

सम्प्रदान : सम्प्रदाय कारक में नै, ने और खात्तर का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

(लडके को खाना ला दो) छोरे नै रोटी ल्यादे

(गरीबों को दान देना चाहिए) गरीबां नै दान देणो चाहिए

(हमारे लिए क्या लाए हो) म्हारी खात्तर के ल्यायो सै

अपादान : इस कारक के चिन्ह् तै, परसै, धोरेतै हैं। जैसे–

(खिलौना मुझसे ले लेना) खिलोणा मेरे धोरे ते ले लियो

(आम के वृक्ष से कच्चे आम गिरे) आम तै आम्बी गिरी

(मैं छत से गिर पडा) मैं छात परसै ढैपडो

सम्बन्ध : सम्बन्ध कारक में का, को, की, कै का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

(सीता के लिये क्या लाए) सीता कै खात्तर के ल्यायो

(नीम के नीचे बैठो) नीम के तलै बैठज्या

(उसकी लडकी) बैंह् की छोरी

अधिकरण : इसमें मैं तथा पै का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

(उनके पास क्या रखा है) उनपै के धर्‌यो सै

(पानी तीन बजे आएगा) पाणी तीन पै आवैगो

(उसके बैग में बहुत किताब है) उनका झोला मैं घणी किताब सै

सम्बोधन : इसमें रै, रे, री, अरै आदि चिन्हों का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

(अरे लडके ! मान जाओ)	रै छोरा ! मानज्या
(अरी मां ! मुझे भेज दे)	री में ! मन्नै घाल दे
(अरे ! कहां गया था)	अरै ! कठै गयो थो

अहीरवाटी बोली मेवाती और हरियाणवी का मिश्रण है। इसमें शब्द हरियाणवी के हैं, लेकिन मेवाती, राजस्थानी भाषाओं के नजदीकी भूभाग की बोली होने के कारण इस पर इनकी ध्वनि प्रभाव देखा जाता है। हरियाणवी में कडै, राजस्थानी में कठै, मेवाती में, कित् और अहीरवाटी में कैठे बोला जाता है। अहीरवाटी की अपनी स्थानीय विशेषताएं इसे अन्य बोलियों से अलग करती है।

निष्कर्ष :– भाषा या बोली सीखने, समझने की वह सीढी है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं। भाषा व्याकरण का एक शुद्ध रूप है और किसी क्षेत्र के अन्तर्गत बोली जाने वाली बोली को भाषा का स्वरूप माना जाता है। इस लेख के माध्यम से हमनें हरियाणवी बाालियों को जाना और समझा है। जिसमें विभिन्न प्रकार की हिंदी बोलियों का अध्ययन किया गया है। उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट हुआ है हरियाणवी बोलियों में क्षेत्रीय स्तर पर कुछ विभिन्नताएं हैं। लेकिन इनमें प्रयुक्त होने वाले कारक लग–भग मिलते जुलते हैं। अतः इसके माध्यम से हमने हरियाणवी बोलियों का परस्पर मेल मिलाप को जाना है और उनके सही रूप को समझा है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

संदर्भ सूची

1 शर्मा, महेन्द्रपाल, डॉ॰, भहिंदी भाषा : विकास के सोपान , संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण :2003

2 शुक्ला, अम्बा प्रसाद, भहिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप , हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1966

3 भाटिया, कैलासचन्द्र एवं मोतीलाल चतुर्वेदी, भहिंदी भाषा का स्वरूप और विकास, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1989

4 वर्मा धीरज, भहिंदी भाषा का इतिहास , हिंदुस्तानी एकडमी, प्रयाग, 1988

5 तिवारी भोलानाथ, भहिंदी भाषा की संरचना , प्रभात प्रकाशन, 1982

6 शर्मा रामबाबू, भराजभाषा हिंदी की कहानी , अंकुर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979

7 चतुर्वेदी, रामस्वरूप, भहिंदी साहित्य और संवेदना का विकास , लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1987

8 चटर्जी, सुनीति कुमार, भभारतीय आर्य भाषा और हिंदी , राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1977

9 वत्स, जितेंद्र, डॉ॰, देवेन्द्र प्रसाद सिंह, भभाषा विज्ञान और हिंदी भाषा , निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली, 2011

10 बोरा राजमल, भभारत की भाषाएँ , वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1997

11 शिवमूर्ति शर्मा, भदेशी नाममाला का भाषावैज्ञानिक अध्ययन , देवनागर प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1985

12 रामनिवास मानव, भहरियाणवी : बोली और साहित्य , अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, 2009

13 चडढा सविता, भहिंदी पत्रकारिता, दूरदर्शन और टेलिफिल्म , राजसूर्य प्रकाशन, दिल्ली, 2000

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

14 शर्मा, पूर्णचन्द, डॉ॰, भहरियाणवी और उसकी बोलियों का अध्ययन , हरियाणा पब्लिकेशन ब्यूरो, अम्बाला छावनी, 2002